

कक्षा: ९

हिन्दी

२.न्यायमंत्री

स्वाध्याय

Sem : 1

**प्रश्न 1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक एक वाक्य में
दीजिए :**

(1) शिशुपाल ने अपने घर का दरवाज़ा क्यों खोल दिया?

✓ एक अतिथि को शाम के अंधेरे में आश्रय के लिए
आया देखकर शिशुपाल ने अपने घर दरवाज़ा खोल
दिया।

(2) शिशुपाल किस अवसर की तलाश में था?

✓ शिशुपाल सच्चा न्याय कैसा होता है यह दिखाने के अवसर की तलाश में था।

(3) न्याय के विषय में शिशुपाल के क्या विचार थे?

✓ शिशुपाल मानता था कि न्याय ऐसा हो कि कोई अन्याय और अपराध करने का साहसन कर सके।

(4) परदेशी कौन था? उसने दूसरे दिन क्या किया?

✓ परदेशी स्वयं समाट अशोक था। दूसरे दिन सुब
उठकर परदेशी ने शिशुपाल को धन्यव देकर उससे
विदा ली।

(5) समाट अशोक ने शिशुपाल को राजमुद्रा क्यों दी?

✓ समाट अशोक ने शिशुपाल को न्यायमंत्री के पद
पर नियुक्ति के रूप में राजमुद्रा दी।

(6) राज्य में न्याय के विषय में परिस्थितियाँ कैसे बदल गईं?

✓ शिशुपाल के न्यायमंत्री बनते ही राज्य में पूरी तरह शांति रहने लगी, किसी को किसी प्रकार का भय न रहा।

(7) पहरेदार की हत्या होने पर शिशुपाल की स्थिति
कैसी हो गई?

✓ पहरेदार की हत्या होने पर शिशुपाल की नींद उड़
गई और अपराधी का पता लगान के लिए उन्होंने
दिन-रात एक कर दिए।

(8) अपराधी का पता चलने पर शिशुपाल ने क्या किया?

✓ अपराधी का पता चलने पर शिशुपाल ने सम्राट अशोक को गिरफ्तार करने का आदेश दिया।

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छ: वाक्यों में लिखिए :

(1) समाट अशोक ने न्यायमंत्री की खोज कैसे की ?

✓ अपने राज्य को अपराधमुक्त करने के लिए समाट अशोक को एक सुयोग्य न्यायमंत्री की आवश्यकता थी। न्यायमंत्री की खोज के लिए उन्होंने एक परदेशी नवयुवक का वेश धारण किया। घूमते-घूमते वे ब्राह्मण शिशुपाल के यहाँ पहुँचे।

शिशुपाल न्याय-प्रेमी था। न्याय किसे कहते हैं यह दिखाने के लिए उसे अवसर की तलाश थी। सम्राट् ने उसे अवसर दिया। हत्या का अपराध होने पर शिशुपाल ने निष्पक्ष व्यवहार किया। उसने सम्राट् को सम्राट् मृत्युदंड देने की घोषणा की। उसके इस साहस और निष्पक्ष व्यवहार से प्रसन्न गए। इस प्रकार सम्राट् अशोक ने सही न्यायमंत्री की खोज की।

(2) समाट अशोक ने न्यायमंत्री का पद देते हुए शिशुपाल को क्या दिया?

✓ समाट अशोक ने शिशुपाल को अपनेदरबार में बुलाया। उन्होंने शिशुपाल से कहा कि, मैं आपको न्याय करने का अवसर देना चाहता हूँ। शिशुपाल भी इस अवसर के लिए उन्हें तैयार था। यह जानकर समाट ने न्यायमंत्री बनाया और पहचानने के लिए उसे राजमुद्रा दी।

(3) शिशुपाल के न्यायमंत्री बनते ही राज्य में न्याय के विषय में क्या परिवर्तन हुआ?

✓ न्यायमंत्री बनते ही शिशुपाल ने अपनी कुशलता का परिचय दिया। उन्होंने राज्य को अपराध रहित बनाना शुरू कर दिया। उनके सुप्रबंध का अच्छा असर हुआ। राज्य में पूरी तरह शांति रहने लगी। किसी को किसी प्रकार का भय नहीं रहा।

किसी को किसी प्रकार का भय नहीं रहा। लोग अपने घर के दरवाजे खुले छोड़कर बाहर जाने लगे। चारों तरफ न्यायमंत्री के सुप्रबंध और न्याय की धूम मच गई। इस प्रकार शिशुपाल के न्यायमंत्री बनते ही राज्य की परिस्थितियाँ बदल गई।

(4) समाट अशोक क्यों गद्गद हो गए?

✓ समाट अशोक ने शिशुपाल को न्याय का असली रूप दिखाने का अवसर दिया था। उन्होंने देखा कि शिशुपाल न्याय की कसौटी पर खरा उतरा था। हत्यारे समाट के प्रति उसने जरा भी नरम रुख नहीं अपनाया। उसने अपराधी समाट को

मृत्युदंड देने की घोषणा की। दंड देते समय शिशुपाल ने जरा भी हिचकिचाहट नहीं दिखाई। अपने साहसपूर्ण और निष्पक्ष व्यवहार से उसने समाट का दिल न्यायमंत्री के रूप में शिशुपाल को सफल होते देखकर समाट अशोक गद्गद हो गए।

(5) न्यायमंत्री ने अपराधी समाट के जीवन की रक्षा किस प्रकार की?

✓ समाट अशोक ने एक राजकर्मचारी की हत्या की थी। इस अपराध के लिए न्यायमंत्री ने उन्हें मृत्युदंड देने की घोषणा की। अपराधी और कोई नहीं स्वयं समाट थे। शास्त्रों में राजा को ईश्वररूप माना मृत्युदंड देने की घोषणा की। दंड देते समय शिशुपाल ने जरा भी हिचकिचाहट नहीं दिखाई।

गया है। इसलिए उसे केवल ईश्वर ही दंड दे सकता है न्यायमंत्री ने समाट की जगह उनकी सोने की मूर्ति को फाँसी पर लटकवा दिया। इस प्रकार न्यायमंत्री ने अपराधी समाट के जीवन की रक्षा की।

(6) न्यायमंत्री निरुत्तर क्यों हो गए?

✓ शिशुपाल न्यायमंत्री की कसौटी पर खरे उतरे थे। समाट अशोक ऐसे व्यक्ति को पाकर गद्गद हो गए। लोगों ने भी शिशुपाल का न्याय सुनकर उनकी जयजयकार की। परंतु शिशुपाल को लगा कि न्यायमंत्री की यह जिम्मेदारी उनसे नहीं सँभाली जाएगी।

उन्होंने समाट से राजमुद्रा वापस लेने की प्रार्थना की।
परंतु अशोक ने कहा कि उन्होंने अपने न्यायपूर्ण
व्यवहार से उनकी आँख खोल दी हैं। यह जिम्मेदारी
उनके सिवाय और कोई नहीं उठा सकता। समाट के
इस आग्रह को देखकर न्यायमंत्री निरुत्तर हो गए।

प्रश्न 3. निम्नलिखित विधान कौन कहता हैं? क्यों?

(1) "यह मेरा सौभाग्य है।"

✓ यह विधान शिशुपाल अपने द्वार आए परदेशी युवक से कहता है, क्योंकि वह अतिथि का सत्कार करना अपना कर्तव्य समझता है।

(2) "दोष निकालना तो सुगम है, परंतु कुछ कर दिखाना कठिन है।

✓ यह वाक्य परदेशी युवक (समाट अशोक) शिशुपाल से कहता है, क्योंकि शिशुपाल उससे समाट अशोक के राज्य में हो रहे अन्याय की शिकायत करता है।

(3) "ब्राह्मण के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। मैं
न्याय का डंका बजाकर दिखा दूँगा।

✓ यह वाक्य शिशुपाल परदेशी नवयुवक से कहता है,
क्योंकि परदेशी नवयुवक उसराज्य को अपराधमुक्त करने
का वचन लेना चाहता है।

(4) "तो तुम अपराध स्वीकार करते हो?"

✓ यह वाक्य न्यायमंत्री शिशुपाल समाट अशोक से कहता है, क्योंकि उसने पहरेदार की हत्या की थी।

(5) "महाराज यह राजमुद्रा वापस ले लें, मुझसे यह बोझ नहीं उठाया जाएगा"

✓ यह वाक्य न्यायमंत्री शिशुपाल समाट अशोक से कहता है, क्योंकि उसे लगता है कि वह न्यायमंत्री की जिम्मेदारी नहीं सँभाल पाएगा।

प्रश्न 4 निम्नलिखित शब्दों के विरोधी शब्द लिखिए :

- (1) परदेशी × स्वदेशी
- (2) आदर × अनादर
- (3) अपराधी × निरपराधी
- (4) सुप्रबन्ध × कुप्रबन्ध
- (5) गिरफ्तार × रिहा
- (6) स्वीकार × अस्वीकार

प्रश्न 5 निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए:

- (1) अवस्था : दशा
- (2) अतिथि : मेहमान
- (3) सुगम : सरल
- (4) कठिन : मुश्किल
- (5) उदंड : अविवेकी

(6) हैरान : चकित

(7) निःस्तब्धता : शांति

(8) निरुत्तर : खामोश

प्रश्न 6 सोचकर बताइए :

(1) आप न्यायमंत्री होते तो क्या करते?

✓ मैं न्यायमंत्री होता तो वही करता जो शिशुपाल ने किया।

(2) समाट अशोक की आँखें किस कारण खुल गई?

✓ समाट अशोक की आँखें खुल गईं, क्योंकि शिशुपाल ने उसे दिखा दिया कि सच्चा न्याय किसे कहते हैं।

(3) शिशुपाल के साहस की समाट अशोक ने क्यों प्रशंसा की?

✓ शिशुपाल ने अशोक को पहरेदार की हत्या का अपराधी बताया। उसने समाट को मृत्युदंड देने में जरा भी झिझक नहीं दिखाई। उसकी इस निष्पक्षता और निडरता के कारण समाट अशोक ने उसके साहस की प्रशंसा की।